चौखम्बा संस्कृत सीरीज

१५३

****

कृष्णद्वैपायनमहर्षिव्यासविरचितम्

# ब्रह्माण्डमहापुराणम्

'निर्मला' हिन्दी व्याख्या, वैज्ञानिक विमर्श एवं श्लोकानुक्रमणिका सहित

सम्पादक एवं अनुवादक

**प्रो. दलवीर सिंह चौहान**

एम. ए., पी-एच.डी. ( पुराणेतिहासाचार्य )

भू. पू. अध्यक्ष : संस्कृत विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया

## पूर्वार्द्धम्

**चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस**

वाराणसी

# ब्रह्माण्डपुराण के वर्ण्यविषय

## पूर्वभाग में प्रक्रियापाद

**१. कृत्यसमुद्देश**—पुराणानुक्रमणिका, इसमें पुराण का अवतरण, रोमहर्षण का कुरुक्षेत्र में होना। ऋषियों का कुरुक्षेत्र में एकत्रित होना भाग और फिर उनका रोमहर्षण के ब्रह्माण्ड पुराण के वर्ण्यविषय का पूछना और फिर ब्रह्माण्ड पुराण के समस्त अध्यायों के विषयों का क्रमशः वर्णन।

**२. नैमिषाख्यान कथन**—नैमिषारण्य का वर्णन, राजा पुरुरवा की कहानी, ऋषियों के हाथों उसका विनाश।

**३. हिरण्यगर्भोत्पत्ति वर्णन**—संसार की रचना, जल से ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति, प्रकृति पुरुष विवेचन।

**४. लोक की कल्पना**—ब्रह्माण्ड के जीवन की स्थितियाँ- सत्त्व, रजस् और तमस् के गुण और विष्णु तथा अन्य देवों की प्रकृति, कल्प का वर्णन एवं कल्पयुग व्याख्या।

**५. लोककल्पन**—विष्णु का अवतार वर्णन और पृथ्वी का उद्धार वर्णन, देवों, ऋषियों और मनुष्यों की उत्पत्ति और उनका विनाश (अन्त)।

## पूर्वभाग अनुषंग पाद

**६. कल्प मन्वन्तर व्याख्यान वर्णन**—देवों की उपस्थिति एवं घटना, देवों ऋषियों और मनुष्यों की उत्पत्ति।

**७. लोकज्ञान वर्णन**—पृथ्वी का विभाग, चार युग, कल्प और मन्वन्तर वर्णन, सतयुग, त्रेता, द्वापर आदि चार युगों का वर्णन, पृथ्वी का भूगोल, वनस्पति और प्राणियों की उत्पत्ति, चार धर्म और उनके कर्त्तव्य।

**८. मानव सृष्टि वर्णन**—देवादि सृष्टिकथन, देवों, ऋषियों और मानवों की उत्पत्ति।

**९. रुद्र की उत्पत्ति वर्णन**—ब्रह्म, रुद्र और अन्य देवों की उत्पत्ति, भृगु, अंगिरा और मनु के द्वारा मनुष्यों की उत्पत्ति, रुद्र के द्वारा भूत और पिशाचों की उत्पत्ति।

**१०. महादेव विभूति वर्णन**—रुद्र की उत्पत्ति, नीललोहित की उत्पत्ति, उनके आठ नाम और आठ आकृतियाँ।

**११. ऋषिवंश वर्णन**—भृगु, अंगिरा, मरीचि और पुलस्त्य की उत्पत्ति।

**१२. अग्निवंश वर्णन**—अग्नि की उत्पत्ति, उसकी सन्तान और १० प्रकार की अग्नियों का वर्णन।

**१३. काल सद्भाव**—ऋतुओं की उत्पत्ति, दक्ष की सन्तानें तथा दक्ष यज्ञ में उनकी पुत्री सती जो शंकर की पत्नी थीं, जिनको यज्ञ में न बुलाने पर शंकर के अपमान के कारण दक्ष यज्ञ का विध्वंस।

**१४. प्रियव्रतवंश वर्णन**—स्वायम्भुव प्रियव्रत और उनकी संतानों का वर्णन।

**१५. पृथिवी के आकार के विस्तार**—जम्बूद्वीप का वर्णन, उसके विभाग, देशों और पर्वतों का वर्णन।

**१६. भारतवर्ष वर्णन**—भारत के विभाग, इसके निवासी तथा पर्वत।

**१७. किंपुरुष आदि देश वर्णन**—इलावृत वर्ष और हरिवर्ष वर्णन।

**१८. जम्बूद्वीप वर्णन**—कैलास से गंगा की उत्पत्ति, गंगा का चार दिशाओं में चार नदियों के रूप में बहना।

**१९. प्लक्षद्वीप वर्णन**—प्लक्षद्वीप का वर्णन तथा अन्य शाल्मलि, कुश, क्रौंच, शाक और पुष्कर द्वीपों का वर्णन।

**२०. अधोलोक वर्णन**—अधोलोक वर्णन—नाग और राक्षसों का वर्णन।

## पौराणिक नक्षत्र विज्ञान

**२१. आदित्य व्यूह वर्णन**—पृथ्वी की स्थिति, सूर्य, चन्द्र और उनकी गति समयविभाजन और खगोलीय नक्षत्रों की गति।

**२२. देवग्रहों का वर्णन**—नक्षत्र, तारों की गति, मेघों की उत्पत्ति, सूर्यरथ का वर्णन।

**२३. ध्रुवचर्या का वर्णन**—भिन्न देवों का व्यवसाय, महीनों के देवता, छः ऋतुएँ, ध्रुव के चारों ओर ग्रह-नक्षत्रों का घूमना।

**२४. ज्योतिष सन्निवेशन**—सूर्य प्रकाश का स्रोत तथा अन्य ग्रह नक्षत्रों का प्रकाशक, ऋतुओं का कारण तथा वनस्पतियों को पैदा करने वाला।

**२५. नीलकण्ठ नाम की उत्पत्ति**—क्षीरसागर के मन्थन में निकले हुए कालकूट विष को पीने से शंकर के कण्ठ का नीला हो जाना।

**२६. लिङ्ग की उत्पत्ति कथन**—शिव के लिङ्ग की उत्पत्ति, विष्णु के द्वारा शिव का आदिशास्त्र।

**२७. दारुवन प्रवेश वर्णन**—शिव का नग्न अवस्था में ऋषियों के बीच जाना और लिङ्ग का प्रदर्शन करना, ऋषियों द्वारा शिव को शाप देना, बाद में ऋषियों द्वारा उनके महत्त्व एवं भस्म रमाने के महत्त्व को समझना।

**२८. अमावस्या श्राद्ध में पितरों का परिचय**—अमावस्या श्राद्ध में पितृविचय।

**२९. संख्या वालों का वर्णन**—युगचक्र और उसकी अवधि।

**३०. यज्ञ प्रवर्तन वर्णन**—यज्ञ प्रवर्तनम्। यज्ञों के नाम तथा फल वर्णन।

**३१. चतुर्युगों का वर्णन**—चार युगों का वर्णन, चार वर्ण और युगों की प्रकृति।

**३२. युग प्रजा लक्षण ऋषिप्रवर वर्णन**—विभिन्न युग में मनुष्यों और पशुओं के लक्षण, मन्वन्तरों का कालमान, चारों युगों में शिष्ट और अशिष्ट मनुष्यों के शुभ और अशुभ कार्य। शुभ कर्मों का प्रभाव। चारों आश्रमों के कर्तव्य। चारों यगों में ऋषियों की स्थिति और उनकी सन्तानों का वर्णन।

**३३. ऋषिणलक्षण वर्णन**—मुख्य-मुख्य ऋषियों और उनके शिष्यों एवं पुत्रों का परिचय। ऋषि जिन्होंने वैदिक मन्त्रों का प्रणयन किया। वैदिक मन्त्रो के विभागों का वर्णन।

**३४. व्यासशिष्यों की उत्पत्ति वर्णन**—महर्षि वेदव्यास द्वारा वेदों और पुराणों की रचना करना तथा द्वापर युग में उनकी शिष्य-परम्परा। महर्षि याज्ञवल्क्य और महर्षि शाकल्य के बीच राजा जनक के अश्वमेध यज्ञ की सभा में शास्त्रार्थ और शाकल्य की पराजय।

**३५. वेदव्यासाख्यान स्वायंभुवमन्वतर वर्णन**—महर्षि शाकल्य द्वारा वेद की शाखाओं का वर्णन, ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद की शाखाओं और उनकी संहिताओं के रचयिता ऋषियों का वर्णन, ब्राह्मण, आरण्यक और निरुक्त साहित्य का परिचय, याज्ञवल्क्य और वैशम्पायन की कहानी, ऋषि वंश परम्परा तथा ऋषियों की संख्या, वैवस्वत मनु का परिचय, मनुष्य की सृष्टि और फिर आगे मन्वन्तरों का वर्णन, मन्वन्तरों का काल परिचय। भिन्न-भिन्न मन्वन्तरों में देवता, पितर, ऋषियों, मनुष्यों और राक्षसों का वर्णन।

**३६. शेष मन्वन्तर वर्णन**—शेष मन्वन्तराख्यान और पृथ्वी दोहन, शेष बीते हुए मन्वन्तरों का वर्णन, स्वारोचिष उत्तम तामस रैवत चाक्षुष मन्वन्तरों में मनुष्यों की सृष्टि और उसके मन्वन्तरों का कालमान। उसके बाद स्वारोचिष मन्वन्तर में राजा वेन का परिचय, राजा वेन से आदि राजा पृथु की उत्पत्ति तथा पृथु द्वारा पृथ्वी का दोहन वर्णन, फिर भिन्न-भिन्न कालों में भिन्न-भिन्न देवों, राक्षसों और मनुष्यों द्वारा पृथ्वी दोहन का वर्णन।

**३७. पृथुवंशानुकीर्तन चाक्षुषसर्ग वर्णन**—पृथ्वी के भिन्न-भिन्न नामों की सार्थकता, राजा पृथु के वंश का वर्णन, दक्ष का जन्म, चाक्षुष मन्वन्तर वर्णन।

**३८. वैवस्वत मन्वन्तर वर्णन**—वैवंस्वत मन्वन्तर, मरीचि ऋषि की उत्पत्ति, वैवस्वत मन्वन्तर के राजाओं का परिचय।

## २. मध्य भाग

**१. ऋषिसर्ग वर्णन**—सप्तर्षियों की उत्पत्ति, प्रत्येक मन्वन्तर में इन्हीं सप्तर्षियों की स्थिति का वर्णन, भृगु और अंगिरा ऋषि की उत्पत्ति का वर्णन।

**२. प्रजाप्रतिवंश वर्णन**—प्रजापति दक्ष और उनकी सन्तानों का वर्णन, प्रजापति दक्ष द्वारा ऋषि, देवता, गन्धर्व, मनुष्य, सर्प, राक्षस, यक्ष, भूत, पिशाच, पक्षी, पशु, मृगादि की मानस उत्पत्ति, नारद की उत्पत्ति।

**३. स्वयंभू त्रैगुण्यस्वरूप वर्णन**—वैवस्वत मन्वन्तर में देवों, दानवों, मनुष्यों की विस्तार से उत्पत्ति, धर्म निसर्ग वर्णन, नरनारायण, अग्नि, वायु आदि की उत्पत्ति, मुहूर्तों एवं नक्षत्रों की उत्पत्ति, कश्यप की सन्तानों का वर्णन, देवताओं और ऋषियों की उत्पत्ति।

**४. जय अभिव्याहार**—प्रजासर्ग की इच्छा से ब्रह्मा द्वारा मुख से जय देवताओं की उत्पत्ति उनके द्वारा सन्तान उत्पत्ति न करने के कारण ब्रह्मा द्वारा शाप देना, उसके बाद शाप की वापसी।

**५. मरुद्गण की उत्पत्ति वर्णन**—दैत्य, दानव, गन्धर्व, सर्प, राक्षस, भूत, पिशाच, वसु, पशु-पक्षी और वृक्ष-लताओं की उत्पत्ति का विस्तार से वर्णन, कश्यप पत्नी दिति से हिरण्यकशिपु की उत्पत्ति, उसके अत्याचारों से संसार में हाहाकार, फिर विष्णु द्वारा उसका संहार, दिति और कश्यप से राहु का एवं मरुद्गणों का जन्म।

**६. दनुवंश कीर्तन**—दनु और सिंहिका से महाबली राक्षसों की उत्पत्ति।

**७. काश्यपेय वर्णन**—गन्धर्व और अप्सराओं के पुत्र मौनेयों की वंशावली, कद्रु की सन्तानों का वर्णन, खश की वंशावली, यक्ष और राक्षसों का दैत्यों के साथ विवाह सम्बन्ध और उनसे वंशोत्पत्ति, यक्ष की वंशावली, गुह्यक और अप्सराओं की वंशावली, गरुड़, सिंह शरभ, गौ आदि की उत्पत्ति, वानर वंश का वर्णन, बाली, सुग्रीव की कहानी, रावण को बाली द्वारा पराजित करना, सूर्य का मार्तण्ड कहा जाना, हाथी आदि की स्थिति, भूत और पिशाचों की जातियाँ तथा उनका निवास स्थान, जंगली और पालतू (घरेलू) जानवरों चिड़ियों और सूक्ष्म कीटों, मच्छरों तक की उत्पत्ति कथा।

**८. ऋषिवंश वर्णन**—महर्षि कश्यप द्वारा अपनी सन्तानों का राज्याभिषेक कर यथास्थान उन्हें नियुक्त करना, उसके बाद अत्रि और वशिष्ठ की वंशावली।

**९. पितृकल्प वर्णन**—हिमालय से उमा (पार्वती) गंगा आदि की उत्पत्ति का वर्णन, मानवों के लिए श्राद्ध का महत्त्व, श्राद्ध की विधि का वर्णन, देवपितृगण विवेचन, देवों और पितरों की स्थिति, श्राद्ध में दान की महिमा, दान के पात्र।

**१०. पितृ पितरों के राज्यकल्प**—जय नामक पितरों में सात गणों से संसार की सृष्टि का वर्णन, हिमवान् और मेना से उमा की उत्पत्ति, उमा और शंकर से स्कन्द की उत्पत्ति की कथा, जिसमें अग्नि द्वारा वीर्य वहन करने और फिर गंगा को गर्भ देने और कृत्तिकाओं द्वारा पालन करने से कार्तिकेय की जीवन कथा। अच्छोदा नामक नदी सत्यवती और पीवरी की कहानी, श्राद्ध के लाभ।

**११. श्राद्धकल्प में समिधा वर्णन**—श्राद्ध में देय वस्तुओं के दान का फल वर्णन, श्राद्ध में श्रेष्ठ वस्तुओं

के नाम तथा उनके फल, श्राद्ध एवं बलिकर्म विधि, श्राद्ध और बलि कर्म में देय एवं त्याज्य वस्तुओं का विवेचन एवं श्राद्ध महिमा वर्णन तथा श्राद्धफल विवेचन।

**१२. श्राद्धकल्प**—सर्व श्राद्ध कर्म में सबसे पहले और आगे रहने वाले विश्वेदेव की उत्पत्ति और उनका प्रायश्चित्त वर्णन, पितरों के लिए पिण्डदान और ब्राह्मणों को भोजन कराने के फल।

**१३. श्राद्धकल्प में पुण्य देशों का वर्णन**—श्राद्ध करने के योग्य तीर्थ, नदियाँ, पर्वतादि का वर्णन तथा उन-उन तीर्थ स्थलों में पिण्डदान करने के भिन्न-भिन्न फल। अन्नदान, गुरु तथा ध्यान योग की महिमा।

**१४. श्राद्ध में शौचविधि वर्णन**—श्राद्ध करने का समय, श्राद्ध में प्रयोज्य वस्तुओं तथा वर्ज्य वस्तुओं का वर्णन, श्राद्ध के पात्र, श्राद्ध करने हेतु पवित्र होने की विधि, अशौच निवारण।

**१५. श्राद्धकल्प में ब्राह्मणपरीक्षा वर्णन**—श्राद्ध कर्म में दान देने अथवा भोजन कराने योग्य ब्राह्मणों की परीक्षा। विद्वान् एवं मूर्ख ब्राह्मण को दान देने का फलाफल वर्णन।

**१६. श्राद्धकल्प में दान की प्रशंसा का वर्णन**—श्राद्ध में भिन्न-भिन्न वस्तुओं को दान करने से भिन्न-भिन्न फलों की प्राप्ति का वर्णन।

**१७. श्राद्धकल्प में नक्षत्र तिथि श्राद्ध का फल**—श्राद्ध के लिए समुचित समय का विवेचन तथा कुछ निश्चित दिन एवं तिथियों में श्राद्ध करने से लाभ का वर्णन।

**१८. नक्षत्रों में श्राद्ध करने के फल का वर्णन**—श्राद्धकर्म में कौन-कौन नक्षत्र श्रेष्ठ हैं तथा उनमें श्राद्ध करने का फल वर्णन।

**१९. श्राद्धकल्प में ब्राह्मणों की परीक्षा**—श्राद्ध में भिन्न-भिन्न भोज्य पदार्थों का भोजन कराने का महत्त्व। श्राद्ध में आमन्त्रित करने योग्य अथवा न करने योग्य मनुष्यों का वर्णन, पंक्तिपावन परिचय।

**२०. श्राद्धकल्पवर्णन**—पितृगण, पितरों के सात समूहों का वर्णन, पिण्डदान की महिमा।

**२१. परशुरामकथारम्भ**—परशुराम की कहानी, ऋचीक ऋषि के पुत्र जमदग्नि के पुत्र परशुराम महर्षि और्व द्वारा भगवान् शिव की आराधना कर अस्त्र प्राप्त करने हेतु परशुराम से कटना।

**२२. परशुराम की तपस्या का वर्णन**—परशुराम द्वारा हिमालय पर तपस्या हेतु गमन, हिमालय पर वृक्षों, नदियों और सरोवरों का वर्णन, यहाँ परशुराम द्वारा घोर तप करना और योग की अन्तिम अवस्था समाधि में लीन होना।

**२३. परशुराम शंकर संवाद**—परशुराम की तपस्या देखने हेतु ऋषियों का आगमन, महर्षि भगवान् परशुराम द्वारा शिव को प्रसन्न करना, परशुराम की परीक्षा के लिए व्याध का अत्यन्त भयंकर वेष धारण कर भगवान् शिव का परशुराम के समक्ष उपस्थित होना, परशुराम शिव का संवाद।

**२४. शिव द्वारा परशुराम को आयुध देना**—परशुराम द्वारा व्याध वेषधारी भगवान् शिव को पहचानना और उनके चरणों में नतमस्तक होकर उनकी स्तुति करना, फिर शिव द्वारा परशुराम को आयुध प्रदान करना और परशुराम द्वारा देवों के शत्रुओं के संहार हेतु प्रस्थान तथा जहाँ पर व्याध वेषधारी शंकर उपस्थित हुए थे, वहीं पर उनकी मूर्ति स्थापित करना।

**२५. परशुराम द्वारा शिव की स्तुति और ब्राह्मण बालक की रक्षा**—परशुराम द्वारा भगवान् शिव की स्तुति करना, फिर वहाँ से चल देना, मार्ग में एक सिंह और भेड़िये से आक्रान्त ब्राह्मण बालक का मिलना और परशुराम द्वारा उसकी रक्षा करना और फिर उसे अपना प्रिय मित्र बनाकर साथ लेकर अपने पिता के आश्रम में पहुँचना।

**२६. जमदग्नि के आश्रम में कार्तवीर्य का आना**—हैहयवंशीय राजा कार्तवीर्य अर्जुन का ससैन्य शिकार के लिए प्रस्थान, उसके बाद जमदग्नि के आश्रम में आगमन, वहाँ कामधेनु के प्रभाव से उनका भव्य स्वागत।

**२७. कार्तवीर्य अर्जुन का जमदग्नि द्वारा किया गया अतिथि सत्कार**—महर्षि जमदग्नि द्वारा कामधेनु के प्रभाव से समस्त सुविधाओं से युक्त नगर का बसाना और सभी प्रकार के संसाधनों वाले राजभवन तथा अनेकों दिव्य भवनों का निर्माण करा देना, जहाँ राजा कार्तवीर्य का ससैन्य पूर्ण आनन्द के साथ रात्रिविश्राम करना।

**२८. कार्तवीर्य के मन्त्री द्वारा गोहरण समारम्भ**—कार्तवीर्य के मन्त्री चन्द्रगुप्त द्वारा राजा कार्तवीर्य को जमदग्नि की कामधेनु गाय को प्राप्त करने के लिए कहना, ब्राह्मण मन्त्री द्वारा गोहरण करने को मना करना, परन्तु मन्त्री द्वारा राजा का अधिकार बताकर कार्तवीर्य को गोहरण के लिए तत्पर करना और फिर सैनिकों को लेकर सेनापति द्वारा गो ग्रहण करने जाना।

**२९. जमदग्नि हनन**—गो ग्रहण में जमदग्नि द्वारा गाय के कण्ठ को पकड़ कर लटकना और फिर सैनिकों द्वारा जमदग्नि का वध करना, कामधेनु का स्वर्ग को चला जाना। यह देख कार्तवीर्य का चिन्तित हो जाना।

**३०. जमदग्नि का पुनः जीवित होना**—जमदग्नि के मरने पर उनकी पत्नी रेणुका का करुण क्रन्दन, वन से घूम कर लौटे परशुराम का उनको समझाना, फिर रेणुका द्वारा पति के साथ शरीर को भस्म कर देने का निश्चय करना, उन्हें अग्निदाह से रोकने की भविष्यवाणी होना, उसके बाद महर्षि भृगु का उस आश्रम में आकर जमदग्नि को जीवित करना, फिर परशुराम द्वारा २१ बार क्षत्रियों के संहार की प्रतिज्ञा करना।

**३१. भृगु का परशुराम को उपदेश**—जमदग्नि के जीवित होने पर अपने पितामह भृगु का स्वागत करना और वध का समस्त वृत्तान्त बता देना, वहीं पर परशुराम द्वारा अपनी प्रतिज्ञा बताना, भृगु द्वारा क्षत्रिय संहार की प्रतिज्ञा को कठिन बताते हुए परशुराम को भगवान् शंकर की तपस्या कर त्रैलोक्य कवच को प्राप्त करने का परामर्श देना।

**३२. परशुराम का तपस्या द्वारा शिव को प्रसन्न करना**—परशुराम अपनी तपस्या से शिव को प्रसन्न कर उनसे त्रैलोक्य कवच को प्राप्त करते हैं और शक्तिशाली पाशुपतास्त्र को भी प्राप्त करते हैं और फिर पुष्कर द्वीप को चले जाते हैं।

**३३. त्रैलोक्य कवच वर्णन**—त्रैलोक्य कवच मन्त्र तथा उसकी प्रयोगविधि, श्रीकृष्ण की उपासना।

**३४. मृगमृगी संवाद**—पुष्कर तीर्थ में परशुराम द्वारा स्नान करते समय मृगमृगी के संवाद में अपनी प्रतिज्ञा की कहानी को सुनना, उसके बाद मृगमृगी मिथुन द्वारा अगस्त्य के आश्रम पर भगवान् श्रीकृष्ण के प्रेमामृत स्तोत्र कथा के महत्त्व के विषय में जानना।

**३५. मृग और मृगी की कथा, परशुराम का अगस्त्याश्रम में जाना**—मृगमृगी मिथुन के पूर्वजन्म की कहानी सुनना, फिर परशुराम द्वारा अगस्त्य मुनि के आश्रम का पुनरुद्धार करना, तथा वहीं पर मृगमृगी का पहुँचना।

**३६. अगस्त्य द्वारा कृष प्रेमामृत स्तोत्र का कथन**—परशुराम द्वारा कृष्ण प्रेम से सम्बन्धित कहानी को सुनना, वहीं पर मृगमिथुन का शरीर त्याग करना।

**३७. परशुराम को कृष्ण का वरदान**—परशुराम द्वारा अपनी समस्त बीती हुई घटना को सुनाना और फिर कृष्ण द्वारा उन्हें पृथ्वी पर के समस्त क्षत्रियों के विनाश का वरदान देना।

**३८. कार्तवीर्य अर्जुन के साथ परशुराम युद्ध, राजा मत्स्य का वध**—परशुराम का कार्तवीर्य की राजधानी महिष्मती में प्रस्थान करना और कार्तवीर्य को युद्ध के लिए ललकारना तथा कार्तवीर्य द्वारा भेजे गये राजा मत्स्य के साथ परशुराम का घोर संग्राम तथा महाराज मत्स्य का युद्ध में वीरगति को प्राप्त होना।

**३९. परशुरामकृत भद्रकाली स्तुति**—परशुराम द्वारा अनेकों क्षत्रिय राजाओं का मारा जाना, परन्तु राजा सुचन्द्र को मारने के लिए असमर्थ होकर भद्रकाली देवी की स्तुति करना, भद्रकाली द्वारा उन्हें अग्निबाण प्रदत्त करना और उसकी प्रयोग विधि बताना और फिर उस अग्न्यस्त्र द्वारा राजा सुचन्द्र का वध करना।

**४०. कार्तवीर्य अर्जुन वध**—परशुराम द्वारा अनेकों राजाओं के वध के बाद कार्तवीर्य के साथ घोर युद्ध और उस युद्ध में कार्तवीर्य का वध करना।

**४१. परशुराम का कैलास जाना**—कार्तवीर्य के समस्त पुत्रों का वध करने के बाद परशुराम का भगवान् शंकर के पास कैलास पर्वत पर जाना और वहाँ पर गणेश द्वारा उनको जाने की अनुमति न देना, तब वहाँ गणेशजी के साथ परशुराम का वाग्युद्ध होना, गणेश परशुराम का युद्ध और परशुराम द्वारा परशु प्रहार तथा परशु को रोक कर गणेश जी का तीनों लोकों में घूमना, फिर वहीं पर आकर स्थित होना।

**४२. परशुराम गणेश युद्ध वर्णन**—परशु को गणेशजी द्वारा दाँत से रोकना और उनके दाँत का टूट जाना, उसकी घोर ध्वनि सुन कर सबका उपस्थित होना और फिर पुत्र गणेश का टूटा हुआ दाँत देखकर पार्वती का क्रोधित होना, पार्वती के क्रोध को शान्त करने के लिए शिवजी द्वारा स्तुति किये जाने पर राधा-कृष्ण का आगमन, कृष्ण के वरदान से गणेश को वक्रतुण्ड नाम प्राप्त होना, श्रीराधा द्वारा पार्वती को समझाना तथा श्रीराधा के हाथ के स्पर्श से गणेशजी के घाव का भर जाना।

**४३. परशुरामकृत पार्वती स्तुति**—परशुराम को श्रीकृष्ण द्वारा वर की प्राप्ति, श्रीराधा द्वारा परशुराम और गणेशजी को वर की प्राप्ति, पार्वती द्वारा परशुराम को वर प्राप्ति, उसके बाद परशुराम का अपने घर आना।

**४४. कार्तवीर्यवंश विनाश वर्णन**—पिता जमदग्नि के समक्ष परशुराम द्वारा हैहयवंशीय कार्तवीर्य के विनाश का वृत्तान्त कहना, तब क्षत्रियों के विनाशरूपी पाप की निवृत्ति के लिए जमदग्नि द्वारा परशुराम को प्रायश्चित्त का उपदेश देना, फिर तप करने हेतु परशुराम का महेन्द्र पर्वत पर जाना।

**४५. जमदग्नि वध**—मृगयोत्सुक शूरसेनादि राजपुत्रों द्वारा परशुराम से वैर का बदला लेने की दृष्टि से जमदग्नि के आश्रम में आकर जमदग्नि के शिर को काटकर अपने नगर को ले जाना, जमदग्नि पत्नी रेणुका द्वारा प्राण त्यागना, उसके पुत्रों द्वारा उसकी दाहक्रिया करना और बारह वर्ष बाद तप से लौट कर परशुराम का अपने आश्रम पर आना।

**४६. परशुराम द्वारा २१ बार क्षत्रिय वध वर्णन**—पितृ निधन को सुनकर परशुराम द्वारा यह प्रतिज्ञा करना कि मैं क्षत्रियों के रुधिर से पिता का तर्पण करूँगा, फिर युद्ध करने के लिए माहिष्मती नगर जाना और शूरसेन आदि का वध करना तथा इक्कीस बार पृथ्वी को क्षत्रिय विहीन करना।

**४७. परशुराम का तपस्या के लिये महेन्द्र पर्वत पर जाना**—परशुराम द्वारा कुरुक्षेत्र में पाँच नदियाँ खोदकर क्षत्रियों के रुधिर से भर कर वहाँ पितृतर्पण कर स्यमन्तक पञ्चक नामक तीर्थ बनाना, उस तीर्थ पर परशुराम के समस्त पितरों का उपस्थित होना और परशुराम को क्षत्रियवध का प्रायश्चित्त करने के लिए कहकर अन्तर्धान हो जाना, परशुराम का तीर्थाटन करना और फिर सिद्धिवन में तप करना, वहाँ अश्वमेध यज्ञ कर समस्त पृथ्वी को कश्यप के लिए प्रदान करना, अन्त में महर्षि और्व के आश्रम में राजा सगर का जन्म होना और फिर पृथ्वी के सभी राजाओं को जीतना तथा राजा सगर द्वारा वशिष्ठ की आज्ञा से अश्वमेध यज्ञ का विचार करना।

**४८. सगर प्रतिज्ञापालन**—अश्वमेध यज्ञ के प्रसङ्ग से राजा सगर द्वारा कार्तवीर्य के वंशज राजाओं का वशिष्ठ की आज्ञा से वध न करके उन्हें राज्यभ्रष्ट, धर्मभ्रष्ट और जातिभ्रष्ट करना।

**४९. सगर दिग्विजय**—सगर की दिग्विजय यात्रा, सगर का विवाह वर्णन, पृथ्वी के सभी राजाओं से कर ग्रहण करते हुए अपने नगर में लौट कर नागरिक सत्कार को प्राप्त करना, वशिष्ठ के आश्रम में जाना, वहाँ उनका सत्कार, उसके बाद अपनी दो पत्नियों के साथ राज्यसुख भोगना।

**५०. सगर का और्व ऋषि के आश्रम जाना**—राजा सगर को अपनी दोनों पत्नियों से पुत्र प्राप्ति न होने के कारण दुःखी होना और अपनी दोनों पत्नियों सहित पुत्रप्राप्ति के लिए महर्षि और्व के आश्रम में जाना, राजा से ऋषि का पूछना और राजा द्वारा अपने अपुत्रत्व दुःख को बताना और फिर ऋषि द्वारा उन्हें पुत्र होने का उपाय करना।

**५१. असमंजस त्याग**—सगर पत्नियों में एक को एक और दूसरी पत्नी को साठ हजार पुत्र होने का ऋषि द्वारा वरदान प्राप्त होना, उसके बाद केसिनी को एक असमंजस का जन्म होना और सुमति को साठ हजार पुत्रों का जन्म होना, फिर असमंजस के शरीर में पिशाच का वास होने से उसके घोर अत्याचारों से राजा सगर द्वारा उस पुत्र का परित्याग करना।

**५२. अश्वमोचन**—सगर पुत्रों के उपद्रव से त्रस्त देवों का ब्रह्माजी के पास आना, पितामह के निर्देश पर देवों का कपिलाश्रम जाना, सगर पुत्रों के नाश के लिए कपिल मुनि का वरदान, सगर के घर में अश्वमेध यज्ञ का आरम्भ होना, सगर पुत्रों का अश्व के साथ समस्त भूतल पर जाना।

**५३. सगर पुत्रों का विनाश**—देवराज इन्द्र द्वारा अश्वमेध यज्ञ के अश्व को चुराना और कपिलमुनि के आश्रम में उसे छोड़ना, सगर के साठ हजार पुत्रों द्वारा अश्व को वहाँ देखना, कपिल मुनि के आश्रम में अश्व को देखकर उन सबका कहना कि अश्व को चुराने वाले ये कपिल मुनि ही हैं, ऐसा सोचकर उनको घसीटना तब कपिलमुनि की क्रोधाग्नि में उन सबका जलकर भस्म हो जाना।

**५४. कपिल आश्रम में स्थित अश्व को लाना**—राजा सगर के पास नारदमुनि का आना, उनके सब पुत्रों के वध से दुःखी राजा को समझाना और फिर असमंजस के पुत्र अंशुमान् द्वारा कपिलाश्रम से अश्व को लाने की राय देना, अंशुमान् का अश्व को लेकर लौटना।

**५५. अंशुमान द्वारा राज्य प्राप्ति**—महाराजा सगर का अश्वमेध यज्ञ को सम्पन्न कर अपने पौत्र अंशुमान् को राज्य सौंपना।

**५६. गंगा का लाना**—सगर के साठ हजार पुत्रों द्वारा खोदी गयी भूमि पर सर्वत्र गड्ढे पैदा होना और समुद्र द्वारा पृथ्वी को आप्लावित करना, गोकर्ण तीर्थ की महानता की प्रशंसा, गोकर्ण तीर्थ के ऋषियों का महेन्द्र पर्वत पर परशुराम के पास जाना और समुद्र द्वारा भूमि को ऊबड़-खाबड़ बनाने की बात कहकर भूमि को समतल बनाने का अनुरोध करना, समुद्र द्वारा भूमि को सही कर देना, उसके बाद अंशुमान् पुत्र भगीरथ द्वारा अपने पूर्वजों के उद्धार के लिए गङ्गा को लाने के लिए शिव को प्रसन्न करना, शिवजी द्वारा गङ्गा को शिर में रोकना, फिर गङ्गा के जल को महर्षि जह्नु द्वारा पी लेना और जाँघ से निकालना, जिसके कारण गङ्गा का जाह्नवी नाम होना।

**५७. वरुण का आगमन वर्णन**—सगर-पुत्रों द्वारा खोदी गयी भूमि को सागर द्वारा नष्ट करने के कारण ऋषियों का परशुराम के पास जाना, उनसे सागर द्वारा भूमि को छोड़ने का अनुरोध करना, क्रोधित परशुराम धनुष पर बाण रख कर चलाना, जिससे समुद्र का सूखना, समुद्र के स्वामी वरुणदेव का आना, परशुराम से हाथ जोड़कर निवेदन करना।

**५८. राम द्वारा गोकर्ण क्षेत्र का समुद्धार**—परशुराम द्वारा यज्ञपात्र फेंकने से तालाब और झरने बनना,

समुद्र द्वारा नष्ट-भ्रष्ट की गयी भूमि को छोड़कर ऊपरी सीमा में स्थित होना, ऋषियों द्वारा परशुराम की प्रशंसा कर गोकर्ण तीर्थ पर लौटना, देवताओं द्वारा परशुराम की प्रशंसा करना।

**५९. वैवस्वत मनु की उत्पत्ति**—वरुण की वंशावली, मार्तण्ड की वंशावली और उनका वंश वर्णन।

**६०. वैवस्वतमनु की सृष्टि वर्णन**—वैवस्वत मनु से दश पुत्रों की उत्पत्ति, पिर यज्ञ से इला नामक कन्या का होना, इला का सुद्युम्न के रूप में बदलना और फिर उमावन में जाने के कारण सुद्युम्न का पुनः स्त्री हो जाना और फिर इला और बुध से चन्द्रमा की उत्पत्ति होना, जिससे चन्द्रवंश का प्रारम्भ होना।

**६१. गान्धर्वमूर्च्छनालक्षण वर्णन**—द्वारकापुरी के बलभद्र द्वारा राजकुमारी रेवती का विवाह होना और रेवती और बलभद्र का वृद्धता से प्रभावित न होने में गान्धर्व विद्या (संगीत) का प्रभाव तथा संगीत विद्या का संक्षिप्त परिचय।

**६२. गान्धर्व लक्षण**—पुनः संगीतशास्त्र का विस्तार से परिचय।

**६३. इक्ष्वाकुवंश वर्णन**—राजा शर्यात की वंशावली, राजा इक्ष्वाकु की वंशावली, राजा इक्ष्वाकु द्वारा अपने पुत्र विकुक्षि को अत्याचारी होने के कारण नष्ट करना, बाद में राजा कुवलाश्व द्वारा राक्षस धुन्धु का वध करना, कुवलाश्व की वंशोत्पत्ति, मान्धाता की राज्य समृद्धि, अन्य राजाओं और उनके कार्यों का वर्णन, राजा सत्यव्रत का चरित्र वर्णन, सत्यव्रत द्वारा विश्वामित्र के परिवार का पालन करना, वशिष्ठ की गाय को मार कर विश्वामित्र के परिवार को खिलाने से सत्यव्रत को शाप देना, तब त्रिशंकु नाम पाना, राजा त्रिशंकु को विश्वामित्र द्वारा स्वर्ग भेजना, राजा हरिश्चन्द्र, सगर आदि की रोचक कथा, सगर द्वारा समस्त हैहयवंशीय राजाओं को पराजित् कर उनके धर्म को नष्ट करना, राजा सगर के साठ हजार पुत्रों का चरित्र वर्णन, फिर अंशुमान्, दिलीप, राजा भगीरथ, नाभाग आदि का चरित्र चित्रण, इसके बाद दिलीप, रघु, दशरथ, राम और उनके भाई एवं पुत्रों का वर्णन। फिर राम से लेकर राजा बृहद्बल तक के राजाओं के कार्यों का वर्णन।

**६४. निमिवंश वर्णन**—इक्ष्वाकुपुत्र निमि के वंश में राजा जनक की उत्पत्ति, उन्हीं के वंश में आगे राजा सीरध्वज की पुत्री सीता की उत्पत्ति, जिनका राम के साथ विवाह, उसके बाद राजा निमि के वंशज बहुलाश्व तथा अन्य राजाओं का वर्णन।

**६५. यदुवंश वर्णन** —अत्रि से चन्द्रोत्पत्ति, चन्द्रमा के पृथ्वी पर गिरने से औषधियों की उत्पति, ब्रह्माजी द्वारा चन्द्रमा को लोकपालक बनाना, राज्य पाकर भ्रष्ट चन्द्रमा द्वारा वृहस्पति की पत्नी तारा का अपहरण करना, उससे सम्भोग करना, तारा द्वारा चन्द्रमा को पुत्र बुध का जन्म होना, फिर बुध और इला से राजा पुरुरवा की उत्पत्ति, पुरुरवा-उर्वशी से छः पुत्रों की उत्पत्ति, चन्द्रमा को यक्ष्मा रोग होना और अत्रि द्वारा उसका रोग निवारण।

**६६. चन्द्र वंश का वर्णन**—पुरुरवा उर्वशी कथानक, बुध पुत्र पुरुरवा का उर्वशी के साथ विवाह वर्णन, पुरुरवा उर्वशी की रोचक कहानी, पुरुरवा के चार पुत्रों में विश्वावसु के भीम, भीम के जह्नु, उसके बाद विश्वामित्र और परशुराम की उत्पत्ति कथा, परशुराम और विश्वामित्र की वंशावली, दान, व्रत, सत्य और तप की महिमा वर्णन।

**६७. धन्वन्तरि की उत्पत्ति वर्णन**—राजा पुरुरवा का पुत्र आयुष् का वंशानुचरित, सागर मन्थन से धन्वन्तरि की उत्पत्ति कथा, विष्णु के वरदान से दूसरे जन्म में राजा दीर्घतमा के पुत्र के रूप में धन्वन्तरि की उत्पत्ति तथा उनकी वंशावली, काशी और लखनऊ के वसने की कथा, भगवान् शंकर द्वारा काशीवास की कथा, काशीवासियों द्वारा गणेश्वर निकुम्भ की पूजा करना, निकुम्भ से काशीराज द्वारा पुत्र का वर न प्राप्त होने के कारण

गणेश्वर के स्थान का छिन्न-भिन्न करना, गणेश्वर द्वारा काशी को निर्जन होने का शाप देना और फिर वहाँ भगवान् शंकर का वसना, काशी के राजाओं का क्रमशः वर्णन, रजि वंश वर्णन, महाराज रजि से इन्द्र द्वारा पुत्रत्व प्राप्त कर राज्य ग्रहण करना, फिर राजपुत्रों द्वारा इन्द्र से राज्य छीनना, इन्द्र का बृहस्पति के पास जाना, बृहस्पति द्वारा रजि पुत्रों की बुद्धि भ्रष्ट करना और इन्द्र की पुनः प्रतिष्ठा करना।

**६८. ययातिचरित वर्णन**—मरुत् और नहुष की वंशावली, वृद्ध राजा ययाति द्वारा पुत्रों से आयु माँगना तथा सबसे छोटे पुत्र पुरु द्वारा आयु देना और युवावस्था का पूर्ण भोग करने के बाद आयु को पुरु को लौटा कर राजा का सन्यास ग्रहण करना, भोग से वैराग्य को प्राप्त राजा द्वारा नैतिक उपदेश देना।

**६९. कार्तवीर्य अर्जुन की उत्पत्ति**—महाराजा यदु का वंश वर्णन और वंशानुचरित वर्णन में कार्तवीर्य, सहस्रार्जुन का जन्म और दत्तात्रेय से अजेयत्व वरों की प्राप्ति, कार्तवीर्य का समुद्रावगाहन तथा कार्तवीर्य द्वारा सूर्य को शक्ति प्रदान करना तथा सूर्य द्वारा आपव मुनि के आश्रम को जलाना तथा आपव मुनि द्वारा शाप देना कि इस अजस्र तपोवन को आगे अर्जुन बहाल करेगा तथा तेरा परशुराम वध करेगा, सहस्रार्जुन द्वारा अनेकों राजाओं को जीतने के वृत्तान्त में लङ्काधीश रावण पर भी विजय प्राप्त करना, उसके बाद कार्तवीर्य के वंशज तालजंघादि का वर्णन।

**७०. तपोवन दग्ध वर्णन**—कार्तवीर्य के पास विप्ररूप से सूर्य का आना और राजा से समुद्र, नदी, वन, पर्वतादि को भोजनार्थ माँगना, राजा द्वारा देने पर सूर्य द्वारा सबको जला देना, उसी में आपव मुनि के आश्रम को जलाना और मुनि द्वारा शाप देना, फिर राजा क्रोष्टु की वंशावली।

**७१. वृष्णि वंश वर्णन**—महाराजा सात्वत की वंशावली एवं वंशानुचरित, सूर्य से सत्राजित् को स्यमन्तकमणि की प्राप्ति, फिर स्यमन्तकमणि कैसे भगवान् कृष्ण को प्राप्त हुई और उन्होंने वभ्रु (अक्रूर) को दिया, इसकी सम्पूर्ण कहानी, फिर माद्रीवंश का वर्णन, अन्धकवंश वर्णन, पाण्डवों की उत्पत्ति, वसुदेव की कहानी, भगवान् श्रीकृष्ण के जन्म का वृत्तान्त, कृष्ण द्वारा कंस वध, देवकी और वसुदेव, यशोदा के जन्मों की कथा, विष्णु के अवतार के रूप में श्रीकृष्ण की कथा का विस्तार से वर्णन, बलराम और कृष्ण की वंशावली, कृष्ण की सभी पत्नियों तथा उनसे उत्पन्न पुत्रों का वर्णन।

**७२. स्तव समाप्ति वर्णन**—ऋषियों के द्वारा भगवान् विष्णु का मनुष्य के रूप में अवतार लेने का कारण पूछना, फिर सूतजी द्वारा भगवान् विष्णु के बारह अवतारों की कहानी बताना, उसके बाद शुक्राचार्य द्वारा असुरों को जीतने के लिए भगवान् शिव की तपस्या करने जाना, उसी बीच भृगुपत्नी द्वारा रक्षित असुरों को मारने का इन्द्र का प्रयास, भृगुपत्नी द्वारा इन्द्र का जड़त्व, इन्द्र के शरीर में प्रविष्ट विष्णु द्वारा भृगुपत्नी के शिर को काटना, फिर भृगु द्वारा विष्णु को मनुष्य के रूप में जन्म ग्रहण करने का शाप देना, उधर इन्द्र द्वारा अपनी पुत्री जयन्ती को शुक्राचार्य की सेवार्थ भेजना, उधर भगवान् शंकर का शुक्राचार्य के समक्ष उपस्थित होना और शुक्राचार्य द्वारा उनकी स्तुति करना।

**७३ विष्णु माहात्म्य वर्णन**—शुक्राचार्य द्वारा शिव से मन्त्र प्राप्त कर लौटना, इन्द्रपुत्री जयन्ती की सेवा से प्रसन्न शुक्राचार्य द्वारा जयन्ती के साथ दश वर्ष तक अदृस्य होकर सहवास में स्थित होना, असुरों का शुक्राचार्य के पास आना तथा उन्हें न देख कर निराश लौटना, फिर देवगुरु बृहस्पति द्वारा शुक्राचार्य के रूप में असुरों को शिक्षा देना, दश वर्ष पूर्ण होने पर शुक्राचार्य का असुरों के पास आना और स्वयं को शुक्राचार्य बताना तथा बृहस्पति को शुक्राचार्य न कहकर असुरों को समझाना, असुरों द्वारा असली शुक्राचार्य को छली-कपटी कहकर लौटाना, क्रुद्ध शुक्र

द्वारा उन्हें बुद्धिहीन होने का शाप देना, फिर बृहस्पति के कपट का पता चलना, तब वामन वेषधारी विष्णु द्वारा असुरेश्वर बलि को बाँधना और असुरों की देवों द्वारा पराजय होना और असुरों द्वारा शुक्राचार्य से क्षमा माँगना, अन्त में भगवान् विष्णु के ९ अवतारों का वर्णन तथा भावी दशवें अवतार में कल्कि के रूप में अवतरित होकर संसार के प्राणियों के दुःखों को हरने की भविष्यवाणी करना।

**७४. तुर्वसु आदि का वंश वर्णन**—ययाति पुत्र तुर्वसु के पुत्रों का वर्णन, तुर्वसु वंश का पुरुवंश में विलय, द्रुह्युवंश वर्णन, अनुवंश वर्णन, अनु के वंश में कुछ राजाओं के बाद हेमपुत्र बलि की उत्पत्ति और उनका चरित्र वर्णन, सुदेष्णा पुत्र दीर्घतमा की कथा, उषिज की पत्नी ममता के साथ उषिज के भाई बृहस्पति का सहवास, गर्भ में उषिज के वीर्य द्वारा उन्हें रोकना और फिर बृहस्पति द्वारा उसे शाप देना, तब उषिज के वीर्य से दीर्घतमा की उत्पत्ति, दीर्घतमा द्वारा वृषभ से वृषभ धर्म की प्राप्ति और फिर वृषभधर्मानुसार उनका अपने छोटे भाई औतथ्य की पत्नी के साथ सहवास, बृहस्पति द्वारा नदी में बहाना, वहाँ बलि द्वारा अपने रनवास में रखना, फिर दासी और बलि की पत्नी से बलि पुत्रों को पैदा करना, अन्त में गौतम ऋषि के रूप में विख्यात होना, फिर बृहद्रथ के २५ राजाओं की वंशावली, फिर नन्दवंश वर्णन, मौर्य वंश, गुप्त वंश, शुक्लवंशीय अन्धक वंशीय, आभीर, गदमी, यवन और तुषार (अंग्रेज) राजाओं का राज्यकाल वर्णन, उसके बाद अन्त में कलियुग की अन्त की स्थिति और सतयुग के आने की भविष्यवाणी तथा परिस्थितियों का वर्णन।

## उत्तर भाग उपसंहार पाद ४

**१. प्रलय का आख्यान**—बीस ऋषियों का वर्णन, अमितभासी २० ऋषियों का वर्णन, बीस सुखों का अस्तित्व, चौदह मनुओं का वर्णन, स्वयम्भू को दक्ष धर्म, भव और ब्रह्म से उसी रूप के चार पुत्रों का वर्णन, प्रथम मेरुसावर्ण में दक्ष पुत्रों मरीचि आदियों और सुधर्मा के द्वादश और नौ का होना, द्वितीय सावर्णं में धर्म के पुत्रों का देवता होना, इन्द्र होना और सप्तर्षि होना, तृतीय सावर्ण में देवों की काम गमन जवाद्युति, चतुर्थ सावर्ण में रुद्र के पुत्रों का पंचगण होना, सब मन्त्रों के क्षीण होने पर संहार स्थिति, तब सब प्रपञ्च का प्रकृति में लीन हो जाना, ब्रह्मा के दिन की वर्णगणना अर्थात् सृष्टिकाल की गणना।

**२. शिवपुर वर्णन**—भूर्भुवः स्वः आदि सात कृत लोकों और सात अकृत लोकों के स्थानियों के साथ स्थानों का वर्णन—वैराजों की ब्रह्मस्वरूपता, परार्द्ध संख्या गणना, गणना करने योग्य संख्या और न गणना करने योग्य असंख्या विचार, क्रोशयोजनादि का परिमाण विचार, पृथ्वी से लेकर ध्रुवपर्यन्त योजनों की ऊँचाई का विचार, ध्रुव से ऊपर ब्रह्मलोक की योजनों में ऊँचाई का विचार, मनुष्य के दुष्कर्मों द्वारा अधोगति प्राप्त करने वाले नरकादिकों का भेद विवेचन, उस उस कर्म के करने से उस उस नरक की प्राप्ति का वर्णन, सब पंचभूत निर्मित प्राणियों की स्वयम्भू द्वारा बनायी गयी संख्या से गणना, लोकोत्तर वर्णन प्रसङ्ग में शिवपुर वर्णन।

**३. प्रतिसर्ग वर्णन**—भक्तियुक्त पुरुषों का शाश्वत रुद्रपद का प्राप्त करना अर्थात् रुद्र में विलीन हो जाना, संहार प्रसंग में पाँच भूतों का एक-दूसरे में लीन हो जाने के वर्णन, धर्म और अधर्मों का गुणमात्रात्मकता से वर्णन, तीन प्रकार के मोक्षों का वर्णन, स्वर्गीय देवों और मनुष्यों के विषय में दोष देखने से वैराग्य के उदय होने का वर्णन, सत्य क्षेत्र, क्षेत्रज्ञ, अक्षर, भोज्य, विभु, पुरुष आदि शब्दों का निर्वचन और अन्त में तीन प्रकार के प्रलयों का वर्णन।

**४. ब्रह्माण्डावर्त वर्णन**—ब्रह्मा की पुनः उत्पत्ति, इस चार पाद वाले वायु प्रोक्त ब्रह्माण्ड महापुराण के सुनने, पढ़ने, पढ़ाने से प्राप्त फल का वर्णन, ब्रह्माण्ड पुराण के सृजन से लेकर ऋषियों द्वारा उसके संरक्षण की शिष्य परम्परा का इतिहास, इस ब्रह्माण्ड पुराण के दानाधिकारियों का लक्षण वर्णन तथा अन्त में श्री महेश्वर के लिए नमन।

## ब्रह्माण्डपुराण के अन्तर्गत ललितोपाख्यान की विषयानुक्रमणिका

**५. अगस्त्ययात्राजनार्दन का आविर्भाव**—तीर्थयात्रा प्रसङ्ग में महर्षि अगस्त्य का कांचीपुर पहुँचना और देवी कामाक्षी की पूजा करना, वहाँ पर उनके समक्ष भगवान् विष्णु का प्रकट होना और अगस्त्य मुनि से देवी ललितेश्वरी की कथा को वर्णन करने का अनुरोध करना।

**६. हिंसादि रूप कथन**—तीनों लोकों के शासक होने के कारण मद में चूर इन्द्र ने स्वेच्छा से विहार करने पर मध्य मार्ग में श्रीशंकर द्वारा भेजे गये ऋषि दुर्वासा के लिए तुष्टदेवी से प्राप्त माला से किसी विद्याधरी द्वारा माल्यार्पण किया जाना, सामने आये हुए इन्द्र के लिए दुर्वासा द्वारा उस दिव्य माला का अर्पण किया जाना और इन्द्र द्वारा उस माला को अपने हाथी ऐरावत के शिर में डाल देना, ऐरावत के शिर से भूमि पर गिरना और दुर्वासा द्वारा इन्द्र को शाप देना और फिर उस शाप से इन्द्र का राज्यविहीन होना, तब इन्द्र का गुरु बृहस्पति से अपने दुःख की कहानी कहना और फिर गुरु बृहस्पति द्वारा इन्द्र को पाप के फल का परिपाक और हिंसा के स्वरूप का वर्णन करना।

**७. स्तेय पान कथन**—विश्वासघात और धन हरण के प्रसङ्ग द्वारा काँचीपुर में रहने वाले वज्र नामक चोर के भूमि में गाड़े हुए धन के दशवें भाग को चुरा कर वीरदत्त किरात द्वारा जलाशय, देवाशय आदि का बनवाना तथा उसके मरने पर वज्राख्य चोर की मृत्यु पर्यन्त वायुमार्ग में स्थित होना, तब द्विजवर्मा (वीरदत्त) किरात की पत्नी द्वारा रुद्र की पूजा, करना तब वज्राख्य चोर की मृत्यु होना, तब उस चोर को स्वर्ग मिलना और वीरदत्त को शिवलोक को प्राप्त करना और फिर चोरी और सुरापान आदि करने के पाप का वर्णन और उससे प्राप्त फल का वर्णन।

**८. अगम्य और आगमादि और उनका प्रायश्चित्त वर्णन**—माता, भाभी, बहिन के साथ समागम करने के पाप का प्रायश्चित्त वर्णन तथा अपनी पत्नी के साथ समागम विधि वर्णन तथा अभक्ष्य भक्ष्य भोजन विधान।

**९. देवासुर अमृत मंथन**—कश्यप पुत्र दनु की पुत्री से उत्पन्न पुत्र देवरूप का इन्द्र द्वारा शिर काटने के पाप से तथा दुर्वासा ऋषि के शाप से इन्द्र सहित सब देवों का राज्यश्री से विहीन होना, फिर इन्द्र का भगवान् विष्णु के पास जाना, वहाँ उन्हें असुरों से मिल कर समुद्र मन्थन का परामर्श देना और यह कहना कि समुद्र में से जो अमृत निकलेगा, उसे मैं छल द्वारा देवताओं को पिला दूँगा, तब सब देवता अमर हो जायेंगे। अतः देवों दानवों का सागर मन्थन में लग जाना, सागर मन्थन में दैत्यों की पराजय।

**१०. मोहिनी का प्रकट होना, मलकासुर वध**—समुद्र मन्थन में प्राप्त अमृत को लेकर देवों और दैत्यों में युद्ध होना, तब विष्णु का मोहिनी रूप धारण कर अमृत बाँटना और फिर समस्त अमृत देवों को दे देना और फिर पुनः देवदानव संग्राम होना तथा अमृतपान के कारण देवों की जय और दैत्यों की पराजय होना, विष्णु द्वारा मोहिनी रूप धारण की चर्चा सुनकर शिव का पार्वती के साथ विष्णु के पास आना और उनसे उस मोहिनी रूप को धारण करने का निवेदन करना, तब विष्णु का मोहिनी रूप धारण करना तो उनको देख कर शिव का मोहित होकर उस मोहिनी के पीछे दौड़ना और फिर उनके वीर्यपात से महाबल का जन्म होना, उसके बाद भण्डासुर और उसकी राज वंशावली और ललिता देवी की उत्पत्ति।

### भण्डासुर की कहानी

**११. भण्डासुर की उत्पत्ति**—शंकर द्वारा भस्म किये गये राख से भण्डासुर की उत्पत्ति, गणेशोपदिष्ट शतरुद्री जाप करने के कारण भगवान् शंकर द्वारा उसे साठ हजार वर्ष तक अखण्ड राज्य करने का वरदान देना।

**१२. ललिताप्रादुर्भाव**—भण्डासुर का शोणितपुर में साठ हजार वर्ष तक राज्य करना, अपने भ्रष्ट राज्य को पुनः प्राप्त करने हेतु इन्द्रप्रस्थ में इन्द्र का ललिता देवी की पूजा करना, भण्डासुर द्वारा पूजा में विघ्न पहुँचाना।

**१३. ललिता देवी की स्तुति**—ब्रह्मा, विष्णु आदि देवताओं द्वारा ललिता शक्ति की स्तुति करना।

**१४. मदनकामेश्वर प्रादुर्भाव**—अलौकिक रूप सौन्दर्य के अनुरूप वर हेतु विष्णु, ब्रह्मा का विचार करना और तब करोड़ों कामदेवों के सौन्दर्य को लेकर भगवान् शंकर का प्रकट होना।

**१५. महादेवी शंकर विवाहोत्सव वर्णन**—ललितादेवी का शंकर के साथ विवाह और वैवाहिक महोत्सव में कामधेनु कल्पादि सदा समृद्धि देने वाले पदार्थों का उस नगर में वास होना, समस्त देवों द्वारा अपने अपने अनुसार वैवाहिक उपहार प्रस्तुत करना और उनकी प्रसन्नतार्थ वहाँ देवों का विकास।

**१६. सेना सहित विजय यात्रा**—देवी ललिता का भण्डासुर के साथ युद्ध के लिए तत्पर होना, ललिता देवी के आयुध और अश्वारूढ़ शक्तियों का वर्णन।

**१७. दण्डिनाथाश्यामलसेना यात्रा**—दण्डिनाथ की पैदल सेना के पदार्पण का वर्णन तथा दण्डिनाथा के आयुधों और सैनिक शक्तियों का वर्णन।

**१८. ललितापरमेश्वरी सेना जययात्रा**—महाराज्ञी ललिता का युद्ध के लिए प्रस्थान करना और उनकी सैन्यशक्तियों का वर्णन तथा ललिता के पच्चीस नामों का वर्णन।

**१९-२० श्रीचक्रराजरथ तथा ज्ञेयचक्रपर्वस्थ देवतानामों का प्रकाशन, किरिचक्ररथ में देवियों के नामों का वर्णन**—ललिता और भण्डासुर का युद्ध प्रारम्भ वर्णन।

**२१. भण्डासुर अहंकार**—भण्डासुर द्वारा अपने नगर की सुरक्षा करना, भण्डासुर के भाई विषंग को मन्त्री कुटिलाक्ष द्वारा युद्ध के लिए भेजना।

**२२. दुर्मद कुरुण्ड वध वर्णन**—ललिता देवी की सेनापति संपत्करी के साथ भण्डासुर के सेनापति और उसके भाई कुरण्ड का युद्ध और उस युद्ध में दोनों का वध।

**२३. करंकादि पाँच सेनापतिवधवर्णन**—भण्डासुर की कुटिलाक्ष के साथ युद्धविषयक मन्त्रणा करना और उसके परामर्श से करंकादि पाँच सेनापतियों को युद्ध के लिए भेजना, वहाँ राक्षस सेना द्वारा सर्पिणियों को पैदा करने वाला अस्त्र प्रहार करना और शक्ति सेना द्वारा नेवले पैदा करने वाला अस्त्र पैदा कर सर्पिणियों का संहार करना।

**२४. बलाहक आदि सात सेनापति वध वर्णन**—भण्डासुर द्वारा सात सेनापतियों को प्रकाश से चकाचौंध करने वाले सूर्य यन्त्र के साथ युद्धक्षेत्र भेजना तथा उनके द्वारा शक्ति सेना को तेज प्रकाश से व्याकुल कर देना, तब दण्डिनाथा द्वारा अन्धकार के रथ पर सवार होकर उनका वध करना।

**२५. विषंगपलायन वर्णन**—युद्ध में त्रिलोक विजयी सेनापति के मरने से भण्डासुर का चिन्तित होना और फिर अपने बहादुर भाई विषंग को युद्ध क्षेत्र में भेजना और साथ में पन्द्रह सेनापतियों और १५ अक्षौहिणी सेना को भेजना तथा रात्रि के समय सोती हुई शक्तिसेना पर प्रहार करना, वहाँ घोर युद्ध होना तथा उस युद्ध में विषंग का युद्धक्षेत्र से भागना।

**२६. भण्डपुत्र वध**—देवी ललितेश्वरी के आदेश से युद्धशिविर की रक्षा के लिए शिविर के चारों ओर बहुत ऊँचा अग्नि प्राकार का निर्माण कराना और फिर युद्धक्षेत्र में भण्डासुर द्वारा भेजे गये भण्डासुर के पुत्रों के साथ नौ वर्ष की ललिता कुमारी का युद्ध होना और उस युद्ध में कुमारी द्वारा भण्डासुर के पुत्रों का दो सौ अक्षौहिणी सेना के साथ वध करना।

**२७. गणनाथपराक्रम वर्णन**—भण्डासुर द्वारा विशुक्र को युद्धक्षेत्र में भेजना और विशुक्र द्वारा मायावी

युद्ध को प्रारम्भ कर शक्तिसेना को आतंकित करना तब ललितेश्वरी के मुख से गणनाथ का उत्पन्न होना और गणनाथ के युद्ध कौशल से भण्ड और विशुक्र का युद्धक्षेत्र से पलायन करना।

**२८. विशुक्र विषंगवध वर्णन**—भण्डासुर के दो पुत्रों विषंग और विशुक्र का विशाल सेना के साथ युद्ध क्षेत्र में आना और उनका ललिता देवी की सेनापति दण्डिनाथा और मन्त्रिनाथा का किरिचक्ररथ और गेयचक्ररथ पर सवार होकर युद्ध करना और भण्डासुर के दोनों भाइयों विशुक्र और विषंग का वध करना।

**२९. भण्डासुर वध वर्णन**—भण्डासुर का कुटिलाक्ष के साथ मन्त्रणा करना और कुटिलाक्ष के साथ विशाल सेना लेकर ललिता देवी के साथ अनेकों प्रकार के आसुर अस्त्रों एवं असुरों को उत्पन्न कर युद्ध करना तथा ललिता देवी द्वारा सबका संहार करना। वहाँ भण्डासुर द्वारा हिरण्यकशिपु, हिरयाक्ष, रावण, कुम्भकर्ण, मेघनाद, केशादि को उत्पन्न कर युद्ध करना तथा ललिता द्वारा नरसिंह, वाराह, राम, लक्ष्मण, कृष्ण आदि को उत्पन्न कर सबका संहार करना, अन्त में ललितेश्वरी द्वारा भण्डासुर वध।

**३०. मदनपुनर्भव वर्णन**—शिव पार्वती विवाह की कथा, कार्त्तिकेय की जन्मकथा, तारकासुर वध वर्णन, इन्द्र पुत्री देवसेना का कार्त्तिकेय के साथ विवाह वर्णन।

**३१. सप्तकक्ष्या मतंगकन्या उत्पत्ति वर्णन**—श्रीललिता द्वारा भण्डासुर को मार देने पर ब्रह्मा आदि देवताओं से प्रेरित विश्वकर्मा और मयदानव द्वारा हेमकूट आदि नवीन पर्वतों पर लवणादि और सात समुद्रों पर विचित्र गोपुरमुकुट द्वार, शाल, उद्यान आदि से युक्त ललिता देवी और मन्त्रिणी के लिये सात कक्ष्यों वाले नगर का निर्माण करना और फिर मतंग कन्या का प्रादुर्भाव होना।

**३२. श्रीनगर त्रिपुरा सप्तकक्षापालक देवता प्रकाशन वर्णन**—श्रीललिता के लिये दिव्य श्रीनगर का निर्माण।

**३३. पुष्पराग प्राकारादिमुक्ताकारान्त सप्तकक्षान्तर कथन**—रत्नमयगृह में ललिता देवी की रस रसायन सिद्ध आराधकों, सिद्धों, अप्सराओं और गोरक्षों के लिये बनाये गये श्रीनगर का वर्णन, रुद्रालोक का वर्णन।

**३४. दिक्पालों द्वारा शिवलोक का अन्तर**—महारुद्र और दूसरे रुद्रों के द्वारा श्री ललिता की आराधना। चन्द्रशेखर के साथ साथ अन्य देवों द्वारा श्रीललिता की स्तुति, पूजा आदि का वर्णन।

**३५. महापद्माटवी अर्घ्यस्थापन कथन**—महाराज्ञी श्रीललिता देवी की अति शानदार प्रभुसत्ता का वर्णन, अनेकों मार्तण्ड, भैरव और शीत, चन्द्र आदि द्वारा श्रीललितेश्वरी की स्तुति, पूजा आदि का वर्णन। महापद्माटवी में शक्तियों का आगमन तथा उस श्रीनगर में अग्नि, चन्द्रमा, ब्रह्मा, विष्णु और रुद्र की उपस्थिति वर्णन।

**३६. चिन्तामणि गृह के अन्दर की कथा का वर्णन**—चिन्तामणि गृह का वर्णन, देवियों के आवासों का वर्णन, शक्तियों द्वारा देवी की स्तुति, सर्वज्ञ और सर्वशक्तिशाली श्रीचक्र का वर्णन।

**३७. गृहराज के अन्दर का कथन**—दिव्यगृहराजभवन में ललिता देवी की पजा अर्चना, शिव और ललिता का अलौकिक सौन्दर्य वर्णन।

**३८. मन्त्रराज साधन कथन**—महादेवी ललिता के अप्रतिम और अलौकिक शृङ्गारिक रूप सौन्दर्य का वर्णन और उनकी पूजा का फल (प्रभाव) वर्णन।

**३९. काञ्चीय कामक्षी वर्णन**—काञ्चीपुरम में महादेवी ललितेश्वरी काकामाक्षी के रूप में वर्णन तथा वहाँ पूजा करने का फल वर्णन तथा दशरथादि को वहाँ पूजन करने से फल प्राप्ति का वर्णन।

**४०. काञ्चीपुर माहात्म्य**—काञ्चीपुरम में खेल-खेल में गौरी द्वारा शिव जी की आंखों को हाथों से ढक

देने पर समस्त संसार में अन्धकार छा जाने से सांसारिक क्रियाओं के संचालन बन्द होने के वर्णन, जिस पर शिव द्वारा गौरी का त्याग करना और गौरी का दुःखित होना और बाद शिव और गौरी का एक हो जाने का वर्णन। काञ्चीपुरम में कम्पानदी में स्नान करने का फल कथन और वहाँ परपूजा करने का फल वर्णन।

**४१. श्रीविद्यायन्त्र उपासना**—श्रीविद्या के ध्यान करने और पूजा आराधना करने से सभी प्रकार की मनोकामनाओं का पूर्ण हो जाना।

**४२. देवी पूजा में मुद्रा**—कामाक्षी देवी की पूजा में हाथ की आकृतियों (मुद्राओं) द्वारा पूजा करने का महत्त्व वर्णन।

**४३. श्रीदेवीपूजन दीक्षा कथन**—सहस्राक्षर विद्या के साथ देवी की पूजा के लिये विधि विधान, शिक्षा अथवा पूजा के विषय गुरु का महत्त्व और गुरु शिष्य सम्बन्ध वर्णन।

**४४. देवी पूजा प्रकार वर्णन**—कामाक्षी देवी की पूजा के लिये विधि विधान सावधानियाँ।

***